जापान का मत्स्योत्पादन
(Fisheries of Japan)

(A) उद्देश्य (Objective) → मछली एक महत्वपूर्ण खाद्य भोज पदार्थ है। इस तथ्य के पर्याप्त प्रमाण मौजूद हैं कि प्रागैतिहासिक मानव ने भालों, हुकों, छड़ों व फाल आदि की सहायता से मछली पकड़ना शुरू किया था। प्राचीन मिस्त्र, चीन, यूनान, रोम व फोनीशिया के निवासियों द्वारा प्रयुक्त ये विधियाँ आज भी विश्व के अनेक भागों में मछलियों को पकड़ने में प्रचलित हैं तो दूसरी ओर विकसित देशों ने अत्याधुनिक तकनीकों का प्रचुर प्रयोग करके मत्स्योत्पादन को नवीनतम उद्योगों के समकक्ष खड़ा कर दिया है।

जापान इस दृष्टि से संसार के अग्रणी देशों में से एक है। आज इस आधुनिक उद्योग में जापान की करीब 15 प्रतिशत आबादी रोजगारत है।

(B) परिचय (Introduction) :-

मछली जापान के निवासियों का मुख्य भोजन है। आज भी इस देश के 20 प्रतिशत लोगों की आजीविका मत्स्योत्पादन से प्राप्त होती है। चावल तथा मछली जापान की अधिकांश जनसंख्या का प्रमुख खाद्य-पदार्थ है। यदि विश्व में मछली के उत्पादन तथा खपत दोनों पहलुओं का विश्लेषण हो तो जापान

जबकि दूसरी ओर जापान विश्व में प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष सबसे अधिक मछली की खपत करता है। जापान में प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति 100 पौंड मछलियाँ पकड़ी जाती हैं

यहां प्रति वर्ष 65 पौंड प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष मछलियों की खपत होती है जबकि यह जर्मनी में 18 से 20 पौंड एवं ग्रेट ब्रिटेन में 40 पौंड है।

इस प्रकार जापान में प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति जो 100 पौंड मछली पकड़ी जाती है, उसमें से 65 पौंड प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति के औसत दर से देश में ही खपत हो जाती है, शेष 35 पौंड के दर से इसका निर्यात किया जाता है।

जापान में प्रति व्यक्ति मछलियों की खपत का प्रमुख कारण है।

जापान में प्रति व्यक्ति मछलियों की खपत का प्रमुख कारण यह है कि दूध, मांस एवं अंडा जैसे मछली के प्रोटीन प्रधान खाद्य के विकल्प की यहाँ भारी कमी है, यहां मांस एवं दूध वाले पशुओं की निहायत कमी है, जबकि मत्स्योत्पादन की अधिकता है। इसलिए उनकी (प्रोटीनयुक्त भोजन) कमी मछली से पूरी की जाती है।

जापान में मत्स्योत्पादन (FISHERIES OF JAPAN)

विश्व के मात्र 0.26% भू-भाग पर स्थित द्वीपों के इस देश में विश्व की 5% आबादी का निवास है। चावल इस देश के निवासियों का प्रधान खाद्यान्न है। जबकि विश्व के सम्पूर्ण चावल का मात्र 1.95% ही यहां उत्पन्न होता है।

खाद्यान्नों की कमी को भारी मत्स्यन से ही पूरा किया जाता है, क्योंकि इस दृष्टि से यह विश्व का दूसरा अग्रणी राष्ट्र है; सम्पूर्ण विश्व की 5.1% मछली यहां पकड़ी जाती है। द्वितीय विश्वयुद्ध के पूर्व जापान विश्व के सम्पूर्ण का 40% मत्स्योत्पादन करता था।

सन् 1959 ई० तक यह विश्व का अग्रणी मत्स्योत्पादन राष्ट्र था। लेकिन पेरू ने तब इससे ज्यादा मछली पकड़कर इस दृष्टि से विश्व का अग्रणी राष्ट्र बन गया। जापान तब इस मामले में विश्व का दूसरा अग्रणी राष्ट्र हो गया। तब से विश्व मत्स्योत्पादन में इसकी हिस्सेदारी लगातार कम होती गई है। विश्व में मत्स्योत्पादन में जापान की हिस्सेदारी में ह्रास तब अंकित होते रहे जब जापान में मछली पकड़ने की मात्रा में निरन्तर वृद्धि होती गयी है। ऐसी स्थिति में मत्स्योत्पादन में जापान की ह्रासोन्मुख हिस्सेदारी का एक मात्र कारण संसार के अनेक अन्य देशों में मत्स्योद्योग का भारी विकास कहा जा सकता है। अब तो जापान विश्व का दूसरा सबसे बड़ा (5.1%) मछली पकड़ने वाला राष्ट्र हो गया है। प्रथम स्थान पर चीन (32.4%) आ गया है।

मत्स्य उद्योग के विकास के कारण
(causes of development of Fisheries)

जापान में मत्स्योद्योग के अति महत्वपूर्ण एवं तीव्र विकास के निम्नलिखित तत्वों को जिम्मेवार कहा जा सकता है —

(i) खाद्य पदार्थों का अभाव :—

जापान में जहाँ एक ओर खाद्यान्नों का नितान्त अभाव है, साथ ही दूसरी ओर यहाँ अन्य प्रोटीन-जन्य एवं पौष्टिक आहारों की भी घोर कमी है। इसका आकलन इसी तथ्य से किया जा सकता है कि विश्व के कुल दूध, पनीर, मक्खन, अंडा एवं अन्य प्रोटीन वाले खाद्य-पदार्थों का 1% से भी कम यहाँ उत्पन्न होता है। जबकि

संसार के करीब 5% लोग यहाँ निवास करते हैं जो भोजन में प्रोटीन की कमी को मछली से पूरा करते हैं। इतना ही नहीं जापान में कृषि-योग्य भूमि का भी नितांत अभाव है। देश की कुल भूमि का मात्र 19% ही कृषि योग्य है। यहाँ की कृषि से जो खाद्योत्पादन होता है वह मात्र यहाँ की 60% आबादी की उदर-पूर्ति में ही सक्षम होता है। शेष के लिए आयात सहित अन्य उपाय करने पड़ते हैं, जिनमें मत्स्योत्पादन काफी प्रमुख है।

(ii) द्वीपीय स्थिति :-

यह करीब 1750 द्वीपों का देश है अतएव इस देश की तट रेखा तो काफी विस्तृत है ही, साथ ही यह अत्यंत ही कटी-फटी भी है, जो उत्तम बंदरगाहों के विकास की दृष्टि से अत्यंत ही अनुकूल है।

(iii) अत्यंत ही कटी-फटी तट-रेखा

जापान की तट-रेखा अत्यंत ही कटी-फटी है। इसलिए यह देश के क्षेत्रफल के अनुपात में अधिक लम्बी है। यहाँ 15 वर्गमील क्षेत्र पर एक मील की तटरेखा का औसत है, जबकि ग्रेटब्रिटेन में यह औसत अनुपात 1 और 20 का है। यह अनुपात भारत के सन्दर्भ में 1 और 578 का है। जापान की तटरेखा की लम्बाई 27,200 कि०मी० है जो भारत की तटरेखा (5689 Km) से चार गुनी लम्बी है। लम्बी एवं अत्यंत ही मुड़ी हुई तट रेखा एवं द्वीपों के अत्यधिक संख्या में होने के कारण यहाँ खाड़ियों की भी काफी संख्या है। इसीलिए इसे खाड़ियों का देश

भी कहा जाता है यह स्थिति मछली पकड़ने के अनुकूल है।

(iv) छिछले महादेशीय छज्जे पर स्थिति :→ जापान के द्वीप समूह उत्तर-पश्चिम प्रशांत महासागर के अत्यंत ही छिछले एवं अति विस्तृत मग्नतट पर स्थित है ये मग्नतट कहीं भी 180 मी० से ज्यादा गहरा नहीं है द्वीपों के बीच के आतरिक खाड़ियों की गहराई तो कहीं भी 6 मी० से ज्यादा नहीं है यह स्थिति न केवल मछलियों के प्रजनन तथा विकास एवं मत्स्यन की दृष्टि से अत्यंत ही अनुकूल है।

(v) गर्म एवं ठंडी जलधाराओं का मिलन :→ जापान के प्रशांत महासागरीय तट के सहारे आर्कटिक सागर से आनेवाली क्यूराइल की ठंडी जलधारा तथा दक्षिण से उष्ण कटिबंधीय क्यूरोशियो की गर्म जलधारा आपस में मिलती है यह स्थिति मछलियों के प्रमुख भोजन प्लैंकटन घास के उत्पादन की दृष्टि से आदर्शतम होती है फलत: यहाँ इनकी प्रचुरता है।

(vi) तटीय हिस्सों में जनसंख्या का संकेन्द्रण :→ जापान की अधिकांश आबादी तटीय भागों में ही पाई जाती है परिणाम स्वरूप इनमें से अधिकांश परम्परागत तौर पर ही मत्स्यन के प्रति दिलचस्पी रखते है फलत: इस व्यवसाय में उन्हें पुश्तो से उत्कृष्ट कुशलता एवं दक्षता हासिल है।